बाल किलकारी

(बिहार बाल भवन का मासिक अखबार)

वर्ष - 01, अंक-04
मूल्य 10/-

शिक्षक दिवस पर हमारे प्रिय शिक्षक डॉ. कलाम को समर्पित यह अंक

सितम्बर 2015

नयापन की तलाश

नई सोच दी, नई दिशा दी
तुमने हमें कलाम, करते तुम्हें सलाम।

बच्चों के प्यारे कलाम... हमें छोड़कर चले गये। बस उनकी कही बातें रह गयीं जिन्हें याद रखनी है। उनका कहना था–

–सपने ऊँचे देखो

–लगातार ज्ञान बढ़ाते रहो

–कड़ी मेहनत करो और

–समस्याओं पर विजय पाने का साहस रखो।

हम उनकी इन बातों को जीवन में अपनाकर आगे बढ़ सकते हैं। सफलता पा सकते हैं। उन्होंने अपने जीवन में खूब संघर्ष किया। कड़ी मेहनत की। तभी तो वे हमारे देश के गौरव बने। पूरे विश्व में भारत को एक मजबूत पहचान दी। मिसाइल मैन के नाम से प्रसिद्ध राष्ट्रपति कलाम का व्यक्तित्व एक तपस्वी का रहा, कर्मयोगी का रहा। वे सच्चे अर्थों में 'भारत रत्न' थे।

उनके स्कूल के शिक्षक ने उनसे कहा था, ''जीवन में सफलता तथा अनुकूल परिणाम प्राप्त करने के लिए इच्छा, आस्था और अपेक्षा, इन तीन शक्तियों को भली–भाँति समझ लेना और उन पर प्रभुत्व स्थापित करना चाहिए।'' उन्होंने न केवल अपने शिक्षक की बात सुनी और समझी, वरन् उसे अपने जीवन में इस्तेमाल भी किया।

आप बच्चों को भी अपनी एक नयी दुनिया का निर्माण करना है। आप कर भी रहे हैं। बस इन बातों का ध्यान रखें और अपनी नयी पहचान गढ़ें। तय करें कि इस दुनिया को बेहतर बनाने के लिये आज क्या नया करना चाहेंगे?

शुभकामना!

ज्योति परिहार

ख्वाबों की एक अनोखी उड़ान

आसमान की ऊँचाइयों को छूने के लिए हवाई जहाज और अन्य साधनों से भी जरुरी चीज है हौसला, हौसला आपकी सोच को वह उड़ान देता है जिसका शिखर कामयाबी की चोटी पर है। कामयाबी के शिखर तक पहुँचने की आपने यूँ तो हजारों कहानियाँ पढ़ी होंगी। लेकिन ऐसी ही एक जीती–जागती कहानी है पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम की। भारत के पूर्व राष्ट्रपति जिन्हें दुनिया मिसाइलमैन के नाम से भी जानती है। शुरुआती दौर में व्यक्तिगत जीवन में संघर्ष से जूझने वाले भारत के पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम की डिक्शनरी में 'असंभव' जैसा शब्द नहीं रहा है। इनका जन्म 15 अक्टूबर 1931 को रामेश्वरम् तमिलनाडु में हुआ। ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का पूरा नाम डॉक्टर अबुल पाकिर जैनुलाबदीन अब्दुल कलाम है। कलाम लाडले थे। लेकिन उनका परिवार छोटी–बड़ी मुश्किलों से हमेशा ही जूझता रहता था। उन्हें बचपन में ही अपनी जिम्मेदारियों का एहसास हो गया था। लालटेन की रोशनी में पढ़ाई की । इन्हें परिवार में सबसे अधिक स्नेह प्राप्त हुआ। क्योंकि यह परिवार में सबसे छोटे थे। तब घरों में विद्युत नहीं थी और केरोसीन तेल के दीपक जला करते थे। जिनका समय रात्रि सात से नौ तक नियत था। लेकिन यह अपनी माता के अतिरिक्त स्नेह के कारण पढ़ाई करने हेतु रात के ग्यारह बजे तक दीपक का उपयोग करते थे।

अब्दुल कलाम मदरसे में पढ़ने बाद सुबह रामेश्वरम् के रेलवे स्टेशन और बस अड्डे पर जाकर समाचारपत्र एकत्र करते थे। अब्दुल कलाम अखबार लेने के बाद रामेश्वरम् शहर की सड़कों पर दौड़–दौड़कर सबसे पहले उनका वितरण करते थे। बचपन में ही आत्मनिर्भर बनने की तरफ उनका यह पहला कदम रहा।

जब वे मात्र उन्नीस वर्ष के थे। तब द्वितीय विश्वयुद्ध की आग रामेश्वरम् के द्वार तक पहुँच गयी थी। इन परिस्थितियों में भोजन सहित सभी आवश्यक वस्तुओं का अभाव हो गया था। कलाम 'एयरोस्पेस टेक्नोलॉजी' में आए, तो इसके पीछे उनके पाँचवीं कक्षा के अध्यापक सुब्रह्मण्यम अय्यर की प्रेरणा जरूर थी। अध्यापक की बातों ने उन्हें जीवन के लिए एक मंजिल और उद्देश्य भी प्रदान किया। अभियांत्रिकी की शिक्षा के लिए उन्होंने मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नालॉजी में दाखिला दिया। वहाँ उन्होंने एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग में अध्ययन किया।

हमारे कलाम चाचू ने कहा है :-

- सपना वह नहीं, जो आप नींद में देखें,
  सपने वे हैं जो आपको नींद ही नहीं आने दें।
- इंतजार करने वाले को सिर्फ उतना ही मिलता है,
  जितना कोशिश करने वाले छोड़ देते हैं।
- जीवन में कठिनाइयाँ हमें बर्बाद करने नहीं आतीं,
  बल्कि यह हमारे छुपे हुए सामर्थ्य और शक्तियों को बाहर निकालने में हमारी मदद करती हैं,
  कठिनाइयों को यह जान लेने दो कि आप उससे भी ज्यादा कठिन हैं।
- देश का सबसे अच्छा दिमाग, क्लास रुम की आखिरी बेंचों पर मिल सकता है।

माथापच्ची

राष्ट्रपति के नाम ढूँढिये

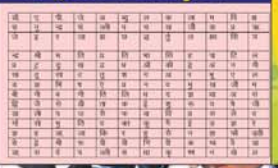

मैं एक गहरा कुआँ हूँ

गुलजार की जुवानी कलाम की कहानी के कुछ अंश

मैं गहरा कुआँ हूँ। इस जमीन पर, बेशुमार लड़के–लड़कियाँ के लिए, जो उनकी प्यास बुझाता रहूँ। उसकी बेपनाह रहमत उसी तरह जर्रे–जर्रे पर बरसती है, जैसे कुआँ सबकी प्यास बुझाता है । इतनी सी कहानी है मेरी। आशिअम्मा के बेटे की कहानी। उस लड़के की कहानी जो अखबार बेचकर भाई की मदद करता था। उस शागिर्द की कहानी, जिसकी परवरिश शिवसुब्रह्मण्यम अय्यर और अय्या दोराइ सोलेमन ने की। उस विद्यार्थी की कहानी, जिसे शिवा अययर ने तालीम दी, जिसे एमजीक मेनन और प्रोफेसर साराभाई ने इंजीनियर की पहचान दी। जो नाकामियों और मुश्किलों में पलकर साइंसदान बना। मेरी कहानी मेरे साथ खत्म हो जाएगी, क्योंकि मेरे पास कोई पूँजी नही हैं। मैंने कुछ हासिल नहीं किया है...मेरे पास कुछ नहीं...और कोई नहीं। न बेटा–बेटी, न परिवार। मैं दूसरों के लिए मिसाल नहीं बनना चाहता। पर कुछ पढ़ने वाले को प्रेरणा मिले कि अंतिम सुख खुदा की रहमत, उनकी विरासत है। परदादा अबुल, दादा पाकीर, वालिद जैनुलआब्दीन का खानदानी सिलसिला कलाम पर खत्म हो जायेगा। लेकिन खुदा की रहमत कभी खत्म नहीं होगी।

कलाम की 11 बातें जो बदल देंगी आपका जीवन :–

- जो लोग जिम्मेवार, सरल, ईमानदार एवं मेहनती होते हैं उन्हें ईश्वर विशेष सम्मान देता है। क्योंकि वे इस धरती पर उसकी श्रेष्ठ रचना है।
- किसी के जीवन में उजाला लाओ। दूसरों का आशीर्वाद प्राप्त करो, माता–पिता की सेवा करो, बड़ों तथा शिक्षकों का आदर करो, और अपने देश से प्रेम करो इनके बिना जीवन अर्थहीन है।
- देना सबसे उच्च एवं श्रेष्ठ गुण है, परन्तु उसे पूर्णता देने के लिए उसके साथ क्षमा भी होनी चाहिए।
- कम–से–कम दो गरीब बच्चों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए उनकी शिक्षा में मदद करो।
- सरलता और परिश्रम का मार्ग अपनाओ, जो सफलता का एक मात्र रास्ता है।
- प्रकृति से सीखो, जहाँ सब कुछ छिपा है।
- हमें मुस्कुराहट का परिधान जरुर पहनना चाहिए, तथा उसे सुरक्षित रखने के लिए हमारी आत्मा को गुणों का परिधान पहनना चाहिए।
- समय, धैर्य तथा प्रकृति, सभी प्रकार के जख्मों को भरने वाले बेहतर चिकित्सक हैं।
- अपने जीवन में उच्चतम एवं श्रेष्ठ लक्ष्य रखो और उसे प्राप्त करो।
- प्रत्येक क्षण रचनात्मकता का क्षण है, उसे व्यर्थ मत करो।

नई पहचान गढ़ेंगे

बचपन में खेला भी,
और संघर्ष में भी मस्त रहे।
अपनी पढ़ाई करने के लिए,
अखबार बेचते व्यस्त रहे।

बड़े हुए तो पढ़ने को पैसे न थे,
बहन ने जेवर गिरवी रख पढ़ाया ।
खूब पढ़ाई करने के बाद,
उम्मीदों पर खड़ा हो
स्वयं को खूब काबिल बनाया।

ग्यारहवें राष्ट्रपति के रुप में शपथ लेकर,
वेतन सिर्फ एक रुपया ही लिया।
अपनी सहजता दिखाई और,
तत्क्षण एक कुछ समझ लिया।

अग्नि, पृथ्वी जैसी मिसाइलें बनाईं,
भारत को नया आयाम दिलाया।
परमाणु ताकत देकर उन्होंने,
भारत का खूब मान बढ़ाया।

हमने भी है प्रण लिया,
डॉ. कलाम की इच्छा पूरी करेंगे।
सोच हमेशा पॉजिटिव रख कर,
देश की नयी पहचान गढ़ेंगे।

गौरव राज
वर्ग–VIIIth

सुनो अब्दुल चाचा

सुनो अब्दुल चाचा,
कहलाते आप मिसाईल मैन।
आप हैं हमारे सुपर हीरो,
हमसब हैं आपके फैन।

राष्ट्रपति, संगीत साधक ,
डॉक्टर, लेखक, साईंटिस्ट।
हर बच्चों के अच्छे दोस्त,
आप रहे शिक्षक फैंटास्टिक।

कुछ करे ऐसा रोज,
जिससे समय का हो सदुपयोग,
करे नयी–नयी खोज,
निकालकर मन का बोझ।

सुनो अब्दुल चाचा,
कर्म कुछ ऐसा करुँगा।
मैं भी आपके जैसा,
एक अच्छा इन्सान बनूँगा।

प्रवीण कुमार
वर्ग–Vth

परम्पराओं को बदल दिया डॉ कलाम ने :–

डॉ. कलाम नाम परम्परागत तौर–तरीकों से आगे निकलने का प्रतीक है। राष्ट्रपति के अपने कार्यकाल में उन्होंने कई अनावश्यक प्रोटोकॉल समाप्त कर दिए थे। इन प्रोटोकॉल को किया समाप्त :–

- राष्ट्रपति कार्यकाल की प्रथा है कि महामहिम के जूते सेवक बाँधता है। कलाम को यह नापसंद था, और उन्होंने फैसला किया कि वह स्वयं अपने जूते बाँधेंगे।
- नवनियुक्त राष्ट्रपति को सेवक पूरा भवन दिखाता है। ये काम भी सेवक के लिए न छोड़ उन्होंने नई राष्ट्रपति बनी प्रतिभा पाटिल को खुद भवन का दौरा कराया।
- 15 अगस्त पर राष्ट्रपति–भवन में होने वाले भोज में ड्रेस कोड प्रोटोकॉल का हिस्सा है। कलाम ने इसकी अनिवार्यता समाप्त कर दी।
- सुरक्षा–घेरा तोड़कर बच्चों से मिलना तो कलाम का चिर–परिचित अंदाज रहा। वे अमूमन प्रोटोकॉल की परवाह किए बिना राष्ट्रपति के सुरक्षाकर्मियों से भी बात करने लगते थे।
- राजघाट पर महात्मा गांधी की समाधि पर जाते समय भी कलाम ने जूते उतारने के लिए सेवक की मदद नहीं ली। खुद जूते उतारे और चल पड़े समाधि की ओर।
- मिसाइल मैन इतने सरल व सहज थे कि चित्रकूट में सरपंचों को संबोधित करने के बाद उनके लिए अलग खाने की व्यवस्था थी। लेकिन उन्होंने सरपंचों के साथ पंगत में बैठ पत्तल में बैठ खाना खाया।

प्रस्तुति–मनीष कुमार

सम्मान का वर्ष	सम्मान/पुरस्कार का नाम	प्रदाता संस्था
2014	डॉक्टर ऑफ साइन्स	एडिशनबर्ग विश्वविद्यालय, यूनाइटेड
2009	वॉन कार्मन विंग्स अन्तर्राष्ट्रीय अवार्ड	कैलिफोर्निया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, (सं.रा.अमे.)
2000	रामानुजन पुरस्कार	अल्वार्स शोध संस्थान, चेन्नई
1998	वीर सावरकर पुरस्कार	भारत सरकार
1997	भारत रत्न	भारत सरकार
1990	पद्म विभूषण	भारत सरकार
1981	पद्म भूषण	भारत सरकार

प्रस्तुति–ब्रजेश पाण्डेय
लेखापाल, किलकारी, पटना

साहस का संकल्प

- ▲ हमें अलग सोचने का साहस लेना चाहिए।
- ६ हमें आविष्कार करने का साहस करना चाहिए।
- ▲ मैं अपने देश का एक युवा होने के नाते काम करुँगा। हर काम में सफलता के लिए साहस से काम करुँगा।
- ▲ अब तक जिस रास्ते की खोज नहीं हुई, उस पर चलने का साहस।
- ▲ असंभव को संभव बनाने का साहस करुँगा।
- ▲ मुश्किलों से मुकाबले का साहस रखूँगा।

नन्हें कलाकार

मैं हूँ एक कलाम

मेरे हर ज्ञान, विज्ञान में,
तुमसे यही विनती है।
मत शोक कर,
आँसू बड़े कीमती हैं।
मैं गया नहीं कहीं, यहीं हूँ
बस तू मुझको देख ले।
फिर से मासूमों के रुप में
ले आऊँगा, नया पैगाम
बोल उठेगी हर तोतली जुबान
हाँ मैं हूँ एक कलाम
मैं हूँ एक कलाम

अभिनंदन गोपाल
वर्ग VIIth

एक महान पुरुष

15 अक्टूबर को भारत में,
एक महापुरुष ने जन्म लिया।
मिसाईल मैन सब कहते उन्हें
देश हित में ऐसा कर्म किया।
बचपन से थे मेहनती,
कुछ करने का सपना था।
चाहे कुछ भी हो परेशानी
हर कठिनाई भी अपना था।
शिक्षक बनकर बच्चों के बीच,
शिक्षा देने वे जाते थे।
उलझन उनकी दूर कर के,
हमेशा वो मुस्कुराते थे।
उनका उत्साह, लगन और परिश्रम,
बन गयी उनकी पहचान।
हम भी कुछ कर सकते हैं,
बनकर चाचा अब्दुल कलाम।

सम्राट समीर, वर्ग–IXth

हमारा सलाम

देश के सबसे महान्,
देते हैं, उन्हें हम सलाम
नाम था उनका यारो
डा. एपीजे अब्दुल कलाम।
अच्छी बातें लेकर तुम्हें डाँटे,
तो उसे तुम सहना।
सफलता की राह पर चलना,
यही था उनका कहना।
सपने देखने चाहिए लेकिन,
खुली आँखों से देखो।,
उन्होंने ही कहा अपने अनुभवों से,
यह बात दिमाग में रखो।
करना बच्चों तुम सब
हरदम अच्छा ही काम,
रौशन करना तुम हरदम
देश और अपना नाम।
दिया गया उन्हें 'भारत रत्न''
हुआ देश का बड़ा मान,
उनका कहना था कि
करना तुम भारत का ऊँचा नाम।

रौशन पाठक
वर्ग–VIIth

कहानी

छोटी कलाम

उन दिनों कलाम के घर में परिस्थितियाँ कुछ अच्छी नहीं चल रही थीं। उनका पूरा परिवार खाना–खाने एक साथ बैठे थे। कलाम की माँ उन्हें रोटियाँ देती जा रही थीं, और कलाम खाते जा रहे थे। अंत में उनके बड़े भाई ने उन्हें एकांत में बुलाया। उन्होंने कलाम को डाँटा। ''तुम्हें पता नहीं है। घर की आर्थिक स्थिति अभी ठीक नहीं है। माँ के हिस्से की सारी रोटियाँ तुमने खा लीं। उन्होंने तुम्हें अपने हिस्से की राटियाँ दे दीं। क्या तू अपनी माँ को भूखा रखेगा? कलाम ने जब यह सुना तो वे खुद को रोक नहीं सके, और दौड़कर अपनी माँ के सीने से लिपटकर रो पड़े। अखबार में यह पढ़ते–पढ़ते आश्मी की आँखों में आँसू आ गए। वह दौड़ी–दौड़ी दीदी के पास गई, और पूछने लगी, ''दीदी अगर हमारे भी माँ–बाप होते तो क्या हमसे इतना ही प्यार करतें?'' इस सवाल को सुनकर दीदी सोच में पड़ गई। फिर वह आश्मी के सिर पर हाथ फेरते हुए बोली। ''हाँ, हमारे भी माँ–बाप हमसे इतना ही प्यार करते। हमें दुनिया की सारी खुशियाँ देते। अच्छा, चल खाना खा ले, और फिर सो जाना, ठीक है?'' आश्मी बोली, ''ठीक है दीदी, चलो।'' खाना खाकर वह खिड़की से आसमान की ओर देखने लगी। वह आज बेहद उदास थी। आखिर उसके अब्दुल चाचू उसे छोड़कर कैसे जा सकते हैं?माँ–पापा के बाद एक वे ही तो उसके मार्गदर्शक हैं। वह इन्हीं ख्यालों में गुम थी, तभी उसे यूँ लगा जैसे उसके अब्दुल चाचू पास बैठे प्यार से उसके सिर पर हाथ फेर रहे हैं। आश्मी बोल पड़ी, ''चाचू आप?मेरा दिल सही कहता था। आप हमें छोड़कर नहीं जा सकते।'' चाचू बोले, ''हाँ बेटा,'' मैं भले ही दुनिया से चला जाऊँ, पर तुम सबके दिलों में हमेशा अमर रहूँगा। ये कभी मत सोचना कि मैं तुम्हें छोड़ कर चला गया। जब कभी भी तुम्हें मेरी जरुरत हो तो बस, उन चाँद–सितारों की ओर देखना और आँखें मूँद कर मुझे याद करना। मैं यूँ ही तुम्हारे पास चला आऊँगा। ''ऐसा हो जाएगा चाचू?'' ''हाँ अवश्य!'' फिर वे बोलने लगे, ''मैं जानता हूँ कि तुम सब मुझसे कितना प्यार करते हो। इसीलिए तुमसे एक बात पूछ रहा हूँ। क्या मेरा कहना मानोगी?अगर तुम्हारा जवाब हाँ है तो सुनो, तुम जीवन में जितनी मेहनत कर सको, करो। जितना ज्यादा ज्ञान ले सको, लो। जिन्दगी में कभी भी हार मत मानना। कभी पीछे मत हटना। अपना अचूक निशाना साधना। पहली बार नहीं सधा तो दूसरी बार सधेगा। दूसरी बार नहीं सधा तो तीसरी बार सधेगा, बस अपने हौसले बुलंद रखना। कभी–न–कभी उसे सधना पड़ेगा। जब तुम्हारे जैसा हर बच्चा सही राह पर चलना सीख जाएगा। तभी असल मायने में तुम्हारा ये कलाम चाचू अमर हो पाएगा। कहो, मेरी बात मानोगी ना।'' आश्मी ने कहा ''हाँ चाचू जरुर! मेरी सफलता यही होगी कि मैं छोटी कलाम बनकर दिखाऊँगी। जब मैं आपकी तरह ही अपना जज्बा कायम कर सकूँगी।'' आश्मी के चाचू तो चल दिए वो अपनी ऊपर की अंतरिक्ष की दुनिया में। पर उसने एक छोटी कलाम को जगा गए। वह शान से बाली, ''मैं अपनी जिन्दगी में डंटकर मुश्किलों का सामना करुँगी। चाचू, आपने मेरी जिन्दगी में माँ–बाप की कमी दूर कर दी। अब मैं भी आपका यह सपना जरुर पूरा करुँगी। यही मेरा निश्चय है। एक बार नहीं आपको लाखों बार सलाम है चाचू। रात गुजर गई, और ये सवेरा आश्मी की जिन्दगी में एक नया सवेरा ले आया। अभी एक मुसीबत का सामना करने के लिए तैयार है, आपकी यह छोटी कलाम।''

प्रियंतरा भारती
कक्षा–VI

बच्चों से संवाद

क्लास सेवेन के छात्र ऋषि ने जब कलाम चाचू से पूछा हमारे माता–पिता और अध्यापक हमें टीवी और सिनेमा देखने से मना करते हैं। आपके विचार से क्या मीडिया हमारे लिए नुकसानदायक है?–ऋषि बगाडिया, कक्षा–सात, डॉ एक राधाकृष्णन विद्यालय, मलाडद्वमुंबई। मैंने अपने आसपास ऐसे अनेक युवाओं को देखा है, जिन्हें शायद ही टीवी या इंटरनेट के लिए समय मिल पाता हो, पर यह सब किसी व्यक्ति के अपने मिशन पर निर्भर करता है। यदि आप अपनी पढ़ाई में बेहतर अर्जित करने में लगे हों, तो मुझे नहीं लगता है आपके पास टीवी देखने का समय होगा, एकाग्रचित छात्र को शायद इस प्रकार के आकर्षण विचलित नहीं करते।

प्रत्येक बच्चा एक वैज्ञानिक है, इससे आपका क्या मतलब है?–अमृता ने जब उनसे सवाल पूछा तो उन्होंने कहा– बच्चा स्वभावतः प्रत्येक चीज के बारे में जिज्ञासवश प्रश्न करता है, तर्क–वितर्क है, वही प्रवृत्ति उसे वैज्ञानिक बनाती है।

आपके नजरिये से राष्ट्र के विकास के लिए सर्वाधिक प्रेरक शक्ति क्या हो सकती है?–कृष्णा के इस सवाल के जवाब में उन्होंने कहा अपने राष्ट्र के विकास के लिए सर्वाधिक प्रेरक शक्ति तो हमारी यही भावना है कि ''हम यह कर सकतें हैं।'' जब हमारे पास पच्चीस वर्ष से कम आयु वाले पचास करोड़ युवा हैं, तो फिर भला कौन हमें वर्ष 2020 तक एक विकसित राष्ट्र बनने से रोक पायेगा!

भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने में एक आदर्श राजनीतिज्ञ की क्या भूमिका होनी चाहिए?–मिथुन के, एआइटीसी, अमृतापुरी। दूसरी पंक्ति में एक जिम्मेवार राजनीतिज्ञ दूरदर्शिता नीतियाँ बनाता है। महात्मा गाँधी ने निष्ठा के राजनीतिज्ञ सिद्धांत को सत्य, अहिंसा एवं निःस्वार्थ भावना में ढालते हुए ब्रिटिश शासकों के विरुद्ध अपनी लड़ाई छेड़ी थी। वर्तमान राजनीतिज्ञों को अपने कठिन परिश्रम, उत्कृष्टा एवं विकसित राष्ट्र के रुप में परिवर्तित करने के लिए मार्गदर्शन देने के साथ–साथ गरीबी रेखा से नीचे रह रहे लगभग 26 करोड़ भारतीयों के उत्थान के लिए भी कार्य करना होगा।

ज्योति ने जब पूछ कि जब आप पढ़ाई कर रहे थे तब नौकरी भी करते थे। उस दौरान आपने अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना कैसे किया?–ज्योति को जवाब देते हुए उन्होंने कहा–मैं अपने सभी कार्यों को पूरी निष्ठा से करता हूँ। मैं समस्याओं को कभी अपने ऊपर हावी नहीं होने देता, इसे विपरीत स्व–प्रयासों से मैं इन समस्याओं को ही अपने वश में कर लेता हूँ।

बूझो–बुझौवल

छूने में शीतल, सूरत में लुभावनी,
रात में मोती और दिन में पानी

बबलू–बबली के चुटकुले

जज : जब आपके घर में चोरी हुई, उस समय क्या बजा था?
बब्लू : जी दो लाठियाँ बजी थी। एक मेरे कंधे पर और दूसरी मेरे सिर पर।

●

टीटी : टिकट दिखाओ
बब्लू : टिकट तो नहीं है।
टीटी : कहाँ जाना है?
बब्लू : जहाँ भगवान श्रीराम का जन्म हुआ था।
टीटी : चलो मेरे साथ।
बब्लू : कहाँ?
टीटी : जहाँ भगवान श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था।

●

हवलदार : तुम्हें शर्म नहीं आती, इतनी बड़ी–बड़ी मुछें रखकर भी साइकिल ठीक से नहीं चला सकते। टक्कर मार दी।
साइकिल सवार: इसमें शर्म की क्या बात है? मूँछों में क्या कोई ब्रेक लगे होते हैं।

[No.G1/Mail/Registration/Renewal/PT-73/2015

ब्रेडा की ओर से आयोजित
प्रतियोगिता में हमारी सहभागिता

यूँ हमने मनाया 69वाँ स्वतंत्रता दिवस

सावन में वाटर पार्क की मस्ती

मन से धन्यवाद!

कलाम के अंदर में बहुत सारे वैज्ञानिक काम करते थे। उनमें से एक वैज्ञानिक कलाम के पास आया, और कहा, "सर! मुझे आज जल्दी घर जाना है। मैंने अपने बच्चों को आज घूमाने का वादा किया है। इसलिए आज मैं अपना काम जल्दी करके घर चला जाऊँगा।" अब्दुल कलाम ने अनुमति दे दी। अनुमति पाकर वैज्ञानिक चला गया। धीरे–धीरे वक्त बीतता गया। सुबह से शाम हो गयी। कलाम ने जाकर वैज्ञानिक को देखा। वह काम में इतना तल्लीन था कि कलाम ने उसे छेड़ना उचित नहीं समझा। कलाम खुद उस वैज्ञानिक के घर गए। उन्होंने उसके बच्चे को घुमाया–फिराया, फिर वापस लाकर बच्चों को घर छोड़ दिया। जब काफी देर हो गई, तब वैज्ञानिक काम करके उठा तो उसने देखा–काफी देर हो चुकी है। वह जब घर पहुँचा तो उसने देखा उसके बच्चे सो गए थे। उसने जब अपनी पत्नी से पूछा कि बच्चों ने घूमने के लिए जिद की कि नहीं, उसकी पत्नी मुस्कुराते हुए बोली, "जिसका बॉस इतना अच्छा है, उसके बच्चों को क्या तकलीफ हो सकती है। इसके बाद पत्नी ने सारी घटना सुना डाली। यह सुन वैज्ञानिक मुस्कुराया और मन–ही–मन अब्दुल कलाम को धन्यवाद कहा।

सीख देने वाली कलाम चाचू की पाँच बातें,

- **ज्ञान के पीछे भागो** कलाम कहते थे। ज्ञान ही सफलता का आधार है। जीवन में 'लक' जैसा कुछ नहीं होता है। सब कुछ मेहनत से है। व्यक्ति सफलता के पीछे भागता है लेकिन उसे ज्ञान के पीछे भागना चाहिए। ज्ञान के मिलने से सफलता वैसे ही मिल जाएगी।
- **छोटी सोच अपराध है** व्यक्ति के आगे बढ़ने में सपने सबसे ज्यादा मददगार होते हैं। अविष्कारकों ने भी सोचा कि ऐसा क्यों होता है। बड़े–बड़े सपने देखो। छोटे सपने देखना अपराध है। एडिसन हों या न्यूटन, आईस्टाईम हों या राईट ब्रदर सबने बड़े सपने देखें।
- **बस काम ही करते रहो** कलाम जब मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में पढ़ रहे थे तो उनके एयरक्राफ्ट डिजाइन को प्रोफेसर ने रिजेक्ट कर दिया था, और तीन दिन में नया डिजाइन लाने को कहा था। नहीं तो उनकी स्कॉलरशिप रोक दी जाती। कलाम ने रातभर काम कर दो दिन में ही डिजाइन तैयार कर लिया था।
- **नई सोच का दुस्साहस दिखाओ** वे कहते थे कि अलग ढंग से सोचने का दुस्साहस करो। आविष्कार का साहस करो। हमेशा असंभव को खोजने का साहस करो और जीतो।
- **बुराई घर से खत्म करो** सन् 2020 तक भारत को भ्रष्टाचार मुक्त राष्ट्र बनाना चाहते थे। बच्चों से कहा था कि वह भ्रष्टाचार को खत्म करने की शुरूआत अपने घर से करे।

जीवन–दर्शन

सवाल आपके———	जवाब कलाम के
सफलता कैसे प्राप्त हो?	सही निर्णय से
सही निर्णय कैसे?	अनुभव से
अनुभव कैसे?	गलत निर्णय से

सोच हमेशा पॉजिटिव

- FAIL - First attempt in learning
  (सीखने का पहला प्रयास)
- END - Effect Never dies.
  (कोशिश कभी नहीं खत्म होती)
- NO - Next opportunity
  (अगला अवसर)

वे तो.....

हिम्मत के वे मिशाल थे
ताकत से वे विशाल थे
कभी न वे रुकते थे
कभी न वे थकते थे
हमेशा मुसीबत से लडते थे
नई राह हमेशा गढ़ते थे
ज्ञान के वे भण्डार थे
विज्ञान के वे चमत्कार थे
बच्चों के वे दीवाने थे
कुछ सीखना, कुछ सीखाने थे
हम करते हैं बारम–बार प्रणाम
वे थे एपीजे अब्दुल कलाम

मुनटुन राज
वर्ग–Xth

भारत की शान

जन्म हुआ रामेश्वरम् में,
आशी अम्मा का उपहार हैं,
अच्छे, सच्चे नेक दिल वाले,
चाचू कलाम को हमारा प्यार है।

सुबह के पहले पहर ही उठ,
अपने कामों में जुट जाते थे
घूम–घूम पेपर बेच कर,
अपना परिवार चलाते थे।

संघर्ष में बीता बचपन,
हिम्मत उनके पास रही,
मेहनत से न कभी पीछे हटे,
कोशिश उनकी कामयाब रही।

मिशन पूरा कर अपना,
भारत को सम्मान दिलाया,
डर, भय अब हटा मन से,
हिन्दुस्तान का शान बढ़ाया।

चाचू कलाम सबके दिलों में रहेंगे,
ऐसा है आपने काम किया,
एक मेहनती बालक बनकर,
देश का रौशन नाम किया।

विष्णु कुमार
वर्ग–VIIIth

भेजें रचनाएँ

दोस्तो !

'बाल किलकारी अखबार' के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य–हम बच्चों की आवाज को बुलंद करना है और सृजनात्मक प्रतिभा को निखारना है। आप अपनी लिखी हुई कहानी, कविता, लघुकथा, चुटकुले। पहेली, चित्र, आपबीती, खेल, अखबार पर प्रतिक्रिया या रचनाएँ भेज सकते हैं। रचना के साथ अपना नाम, वर्ग, विद्यालय का पता, सम्पर्क नम्बर अवश्य ही भेजें। चुनी गई रचनाएँ अगले अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

–बाल सम्पादक मंडल

इस अंक के प्रतिभागी–
सौरभ, राहुल, संजू, युवराज गुप्ता, सम्राट, युवराज सिंह, वेष्णवी, रौशनी, प्रवीण, विष्णु, रौशन, गौरव
बाल सम्पादक– पवन, मनीष, मुनटुन, तुलसी, आकाश,घुघँरू, प्रियंतरा,अभिनंदन, आनंद
संपादक– ज्योति परिहार, निदेशक, बिहार बाल भवन, किलकारी पटना।
विशेष सहयोग– राजीव रंजन श्रीवास्तव
संयोजक– सुधीर कुमार
डिजाइन– विवेक
कार्यालय– बिहार बाल भवन सैदपुर , किलकारी, पटना–800004 (बिहार)

इस अंक के जवाब
बूझो–बुझौवल:
- ओस

वेबसाइट: www.kilkaribihar.org
दूरभाष : 0612-3224919, 2661295 ई–मेल : info@kilkaribihar.org ब्लॉग : kilkaribihar.blogspost.in फेसबुक : www.facebook.com/kilkaribihar यूट्यूब : www.youtube.com/kilkaribihar

★ बच्चों द्वारा रचित, संपादित एवं बच्चों के लिए बाल मासिक अखबार । इस अखबार में छपी हुई रचनाएँ बच्चों के व्यक्तिगत विचार हैं। बच्चों के लिए समर्पित ★